Mind and Society, ISSN 2277-6907
Vol.08, No. I & II, March & June 2019, Page No. 87 to 90

छत्तीसगढ़ के महापुरूषों का सामाजिक समरसता में योगदान

* कु. आबेदा बेगम

Received	Reviewed	Accepted
17 Feb. 2019	21 Feb. 2019	27 Feb. 2019

सामाजिक समरसता एक ऐसा विषय है जिसकी चर्चा करना एवं इसे ठीक प्रकार से कार्यान्वित करना आज समाज एवं राष्ट्र की मूलभूत आवश्यकता है। इसके लिए हमें सर्वप्रथम सामाजिक समरसता के अर्थ का व्यापक अध्ययन करना आवश्यक है। संक्षेप में इसका अर्थ है सामाजिक समानता। यदि व्यापक अर्थ देखें तो इसका अर्थ है जातिगत भेदभाव एवं अस्पृश्यता का जड़मूल से उन्मूल कर लोगों में परस्पर प्रेम एवं सौहार्द बढ़ाना तथा समाज के सभी वर्गों एवं वर्णों के मध्य एकता स्थापित करना। समरस्ता का अर्थ है सभी को अपने समान समझना। सृष्टि में सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की संतान है और उनमें एक ही चैतन्य विद्यमान है इस बात को हृदय से स्वीकार करना।

यदि देखा जाये तो पुरातन भारतीय संस्कृति में कभी भी किसी के साथ किसी भी तरह के भेदभाव स्वीकार नहीं किया गया है। हमारे वेदों में भी जाति या वर्ण के आधार पर किसी भेदभाव का उल्लेख नहीं है। गुलामी के सैंकड़ों वर्षों में आक्रमणकारियों द्वारा हमारे धार्मिक ग्रन्थों में कुछ मिथ्या बातें जोड़ दी गई जिससे उनमें कई विकृतियां आ गई जिसके कारण आज भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो गई है। वेदों में जाति के आधार पर नहीं बल्कि कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था बतायी गयी है। जैसे कि ब्राह्मण का पुत्र वही कर्म करने से ब्राह्मण हुआ एवं शूद्र का पुत्र शूद्र क्योंकि जो व्यक्ति जैसा कार्य करता था उसी अनुसार उसे नाम दिया गया। समय के साथ.साथ इन व्यवस्थाओं में अनेक विकृतियां आती गई जिसके परिणामस्वरूप अनेक कुरीतियों एवं कुप्रथाओं का जन्म हुआ। इन सबके कारण जातिगत भेद.भाव छूआछूत आदि की प्रवृति बढ़ती गई। इसी के चलते उच्चवर्ग एवं निम्नवर्ग का जन्म हुआ। यह भेदभाव इतना बढ़ गया कि उच्च वर्ग निम्न वर्ग के लोगों को ह्रेय दृष्टि से देखने लगा और वे अधिकाधिक पिछड़ते गए। मंदिरों में प्रवेश पर रोक शिक्षण संस्थानों में भेदभावए सार्वजनिक समारोहों में उनकी अनदेखी ऐसे कई कारण हैं जिसके कारण यह लोग उपेक्षित होते गये। उच्च वर्ग के लोग इन लोगों के घर आना जाना तो क्या उनके हाथ का पानी पीना भी धर्म भ्रष्ट हुआ मानने लगे। जातिभेद का दोष ही है जिससे समरसता का अभाव उत्पन्न होता है।[1]

छत्तीसगढ़ विविधताओं से परिपूर्ण राज्य है। यहॉ प्रारंभ से ही विभिन्न जाति, धर्म, समुदाय, तथा वर्ग के लोंग निवास करतें हैं लेकिन समान्यतः उनके बीच किसी प्रकार का द्वेष या भेदभाव नही पाया जाता है। इसके पीछे छत्तीसगढ़ के उन महापुरूषों का विशेष योगदान है जिन्होने समाज मे व्याप्त सामाजिक बुराईयों को दूर करने मे अपना पूरा जीवन लगा दिया। वर्तमान शोध पत्र का उद्वेश्य छत्तीसगढ़ की सामाजिक समरसता मे उन विभुतियों की भूमिका का विश्लेषण करना है जिनके योगदान के बिना यह संभव नही था।

पंडित सुंदरलाल शर्मा– पं.सुन्दलरलाल शर्मा अपने बाल्याकाल से ही उंच–नीच, जाति–पाति, सामाजिक वर्ण व्यवस्था के आडंबरों के घोर विरोधी थे। तत्कालीन समाज में कतिपय उच्च वर्ग में जाति प्रथा कुछ इस प्रकार से घर कर गई थी कि दलितों को वे हेय दृष्टि से देखते थे, सुन्दर लाल जी को यह अटपटा लगता, वे कहते कि हमारे शरीर

* *सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, शासकीय कमलादेवी राठी महिला स्नातक महाविद्यालय,राजनांदगांव (छ.ग.)*

में टंगा यह यज्ञोपवीत ही हमें इनसे अलग करता है। सोलह संस्कारों में से यज्ञोपवीत के कारण ही यदि व्यक्ति श्रेष्ठ माना जाता है तो क्यो न इन दलितों को भी यज्ञोपवीत धारण करवाया जाए और उन्हें संस्कारित किया जाए। मानवता के आदर्श सिद्धांतों के वाहक गुरू घासीदास जी के अनुयायियों को उन्होंनें सन् 1917 में एक वृहद आयोजन के साथ यज्ञोपवीत धारण करवाया। एक योनी प्रसूतश्चन एक सावेन जायते के मंत्र को मानने वाले पं.सुन्दरलाल शर्मा अक्सर महाभारत के शांति पर्व के एक श्लोक का उल्लेख किया करते जिसका अर्थ कुछ इस प्रकार है– मनुष्य जन्म से शूद्र (अबोध बालक) उत्पन्न होता है, जब वह बढ़ता है और उसे मानवता के संस्कार मिलते हैं तब वह द्विज होता है, इस प्रकार सभी मानव जिनमें मानवीय गुण है वे द्विज हैं। अपने इस विचार को पुष्ट करते हुए वे हरिजनों के हृदय में बसे हीन भावना को दूर कर नवीन चेतना का संचार करते रहे। पं.सुन्दरलाल शर्मा जी के इस प्रोत्साहन से जहां एक तरफ दलितों व हरिजनों का उत्साह बढ़ा वहीं दूसरी तरफ कट्टरपंथी ब्राह्मणों नें पं.सुन्दसरलाल शर्मा की कटु आलोचना करनी शुरू कर दी, उन्हें सामाजिक बहिष्कार का दंश भी झेलना पड़ा। 'सतनामी बाम्हन' के ब्यंगोक्ति का सदैव सामना करना पड़ा किन्तु स्व़भाव से दृढ़ निश्चयी पं. सुन्दरलाल शर्मा नें सामाजिक समरसता का डोर नहीं छोड़ा। कट्टरपंथियों के विरोध नें उनके विश्वास को और दृढ़ किया। वे मानते रहे कि समाज में द्विजेतर जातियों का सदैव शोषण होते आया है इसलिए उन्हें मुख्य धारा में लाने हेतु प्रभावी कार्य होने चाहिए, वे भी हमारे भाई हैं। [2]

सन् 1918 में उन्होंने सतनामियों को जनेऊ पहनाकर उन्हें समाज में सवर्णो की बराबरी का स्थान दिया। जनेऊ पहनाते वक्त उनसे यह प्रण लिया गया कि वे नशीले पदार्थ और मांस का सेवन नहीं करेंगे। भगवान राजीव लोचन के मंदिरों में जहां भोई जाति के लोगों को अछूत समझकर नहीं जाने दिया जाता था वहाँ अछूतों का मंदिर में प्रवेश कराया यह प्रथम क्रांतिकारी आंदोलन था । 1924 में आपने ठाकुर प्यारेलालसिंह और घनश्याम गुप्ता के साथ मिलकर सतनामी आश्रम की स्थापना की और सतनामियों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया । राजिम के रामचन्द्र मंदिर में हरिजन प्रवेश में सन् 1925 में आपने कामयाबी हासिल की। 1935 में शर्मा जी ने अपने अन्य सहयोगियों के साथ मिलकर धमतरी में अनाथालय की स्थापना की । रायपुर में सतनामी आश्रम और राजिम में ग्रंथालय वे पहले ही बना चुके थे । उनके ये योगदान सदैव स्मरणीय रहेगें ।

गुरू घासीदास – गुरू घासीदास ने पूरे समाज को मानवता की प्रेरणा दी उनका मानना था कि मानव–मानव एक है । गुरू घासीदास सतनाम पंथ के संस्थापक थे उनके उपदेशों के असर से अनगिनत दलित,शोषित , पीड़ित इंसानों में आस्था विश्वास और अमन का भाव जागृत हुआ।

गुरू घासीदास के शिक्षा सिद्धान्त निम्नलिखित हैं –

1. सत्य आचरण अपनाओं
2. सभी मनुष्य समान है
3. सब पर दया करो
4. मांस भक्षण न करो
5. नारी का सम्मान करो
6. मादक पदार्थो का सेवन न करो
7. दोपहर में हल न चलाओ
8. सूर्य की उपासना करो

आपने समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने का बीड़ा उठाया । आज स्त्रियों को पुरूषों के बराबर अधिकार हासिल है। घासीदासजी छत्तीसगढ़ .में स्त्रियों के प्रथम उद्धारक थे आपने स्त्रियों की दशा सुधारने हेतु अभूतपूर्व योगदान दिया। वे विधवा विवाह के हिमायती थे । जाति व्यवस्था को आपने समाज की एक व्याधि बताया जातिगत भेदभाव मिटाने का संदेश दिया। आपने गरीब, निःसहाय लोगों के उत्थान का प्रयास किया। आपने छत्तीसगढ़ में सामाजिक समरसता स्थापित करने हेतु छत्तीसगढ़ के सच्चे सपूत के रूप में अपना योगदान दिया।

संत गुरु घासीदास ने समाज में व्याप्त कुप्रथाओं का बचपन से ही विरोध किया। उन्होंने समाज में व्याप्त छुआछूत की भावना के विरुद्ध 'मनखे–मनखे एक समान' का संदेश दिया। छत्तीसगढ़ राज्य में गुरु घासीदास की जयंती 18 दिसंबर से माह भर व्यापक उत्सव के रूप में समूचे राज्य में पूरी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई जाती है। इस उपलक्ष्य में गाँव–गाँव में मड़ई–मेले का आयोजन होता है। गुरु घासीदास का जीवन–दर्शन युगों तक मानवता का संदेश देता रहेगा। ये आधुनिक युग के सशक्त क्रान्तिदर्शी गुरु थे। इनका व्यक्तित्व ऐसा प्रकाश स्तंभ है, जिसमें सत्य, अहिंसा, करुणा तथा जीवन का ध्येय उदात्त रुप से प्रकट है। छत्तीसगढ़ शासन ने उनकी स्मृति में सामाजिक चेतना

एवं सामाजिक न्याय के क्षेत्र में 'गुरु घासीदास सम्मान' स्थापित किया है। [3]

शहीद गैंदसिंह – शहीद गैंदसिंह ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ अबूझमाड़ियों को इकट्ठा किया पुरूष और महिलाओं को प्रेरित किया रणनीति बनाने ये इकट्ठे होते थे गैंदसिंह ने सफलतापूर्वक इनके नेतृत्व की कमान संभाली। अंग्रेजो ने इन्हें गिरफ्तार कर लिया 20 जनवरी 1825 को परलकोट के महल के सामने इन्हें फांसी दे दी गयी पर –'' किसी तरह भी कम न होगी नूरे आजादी , कि जल रहा है शहीदों का लहू चिरागों में ।''

शहीद वीरनारायण सिंह– आप रायपुर जिले के सोनाखान के जमींदार थे जनता में लोकप्रिय थे अंग्रेज इनकी लोकप्रियता को मिटाना चाहते थे उसी वक्त आकाल पड़ने पर जनता जब भूख से व्याकुल हो गई तो नारायणसिंह का धैर्य समाप्त हो गया उन्होंने माखन नामक व्यापारी से उसके गोदाम में रखे धान के बोरों को गरीबों को देने की मांग की वह व्यापारी अंग्रेजी सरकार से जुड़ा था उसने इंकार किया सहृदय नारायणसिंह ने उसके गोदाम का ताला तोड़कर धान भूखे किसानों में बिंट दिया । जमाखोर व्यापारी माखन की शिकायत पर अंग्रेज सरकार ने नारायणसिंह को गिरफ्तार कर 24 अक्टूबर 1856 को रायपुर कारागार में बंद कर दिया पर 28 अगस्त 1857 नारायणसिंह फरार होने में कामयाब हो गये आपने 500 किसानों और आदिवासी नवयुवकों की एक सेना बनाई और अपनी भूमि को अंग्रेजों से वापस लेने का संकल्प किया। 20 नवम्बर 1857 को स्मिथ और नेपियर के नेतृत्व में सेना सोनाखान रवाना की गई। स्मिथ जब खरौद में था उस वक्त यदि नारायण सिंह हमला कर देते तो स्मिथ को भागने की राह नहीं मिलती। इस गलती का खमियाजा नारायण सिंह को अपनी जान देकर चुकाना पड़ा नारायण सिंह युद्ध में स्मिथ से हार गये। उन्हें रायपुर जेल लाया गया । रायपुर की अदालत में नारायण सिंह को ब्रिटिश हुकूमत के विरूद्ध विद्रोह करने युद्ध करने के एवज में फांसी की सजा सुनाई । 10 दिसम्बर 1857 को सुबह रायपुर के मुख्य चौराहे पर फांसी पर लटका दिया गया आपका बलिदान छत्तीसगढ़. के इतिहास में अविस्मरीण है।[4]

मिनीमाता – इनका वास्तविक नाम मीनाक्षी और उपनाम मिनी था इनके गांव जमनामुखी असम में अकाल पड़ने के कारण इनके दादा आजीविका के लिये मुंगेली के पास गांव सगोना जिला बिलासपुर से असम के चाय बगान दौलतपुर गये । सतनामी समाज के धर्म गुरू अगमदास जी पलायन से दौलतपुर आकर बसे लोगों से मिलने गये उनकी कोई संतान नहीं थी जिससे मंहतों ने उनसे पुनः विवाह करने का अनुरोध किया वहीं महंत बुधारीदास की कन्या मीनाक्षी की शादी 1932 में गुरू आगमदास जी से हुई फलतः वह गुरूपत्नी याने माता पद की अधिकारिणी बनी । वे गुरू के साथ छत्तीसगढ़ वापस आई। गुरू राष्ट्रीय कांग्रेस के पदाधिकारी थे मिनी माता ने राजनीतिक सफर में हर कदम पर उनका साथ दिया। 1952 में गुरू का देहान्त हो गया तब वे संसद सदस्य थे । पंडित रविशंकर शुक्ल की प्रेरणा से मिनी माता मध्यावधि चुनाव में रायपुर से सांसद चुनी गई। मिनीमाता के कार्य – बाल विवाह का विरोध, अस्पृश्यता निवारण विधेयक के संदर्भ में महत्ती भूमिका, दहेज की विरोधी, तथा गौवध का विरोध जैसे कार्यो के निष्पादन में आपने महत्पपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।[5]

गहिरा गुरू – गहिरा गुरू जनजातियो की दयनीय दशा से दुखी थे। उन्होने जनजातियों को उन्ही के वातावरण में स्वावलंबी बनाने का प्रयत्न किया तथा उनकी अज्ञानता, असभ्यता को दूर करने के लिए कृत संकल्पित हुए। सनातन संस्कृति के अनुरूप सत्य , शान्ति , दया, क्षमा धारण करने तथा चोरी हत्या मिथ्या त्याग करने का उपदेश दिया। [6]

इसके अतिरिक्त वनदेवी पद्मश्री माता राजमोहनी ने वो हर काम किया जो गांधी जी करते थे हर गांव में आश्रम और अनाज कोठी बनी बनाज इकट्ठा कराया साहूकारी शोषण से मुक्ति दिलाई श्रमदान आंदोलन में शमिल हुई । छत्तीसगढ़ की अन्य महिलाओं में श्रीमती पार्वतीबाई गनोदवाले, श्रीमती अंजनीबाई दानी, फूलकुंवर बाई श्रीवास्तव जैसी अनेक महिलाओं के योगदान भी अविस्मरणीय हैं ।

बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी इन प्रतिभाओं ने कृषि, शिक्षा, साहित्य , समाज सेवा के क्षेत्र में सामाजिक समरसता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जो छत्तीसगढ़ के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है । इनके विचारों को वर्तमान समय में हमें अपने जीवन में आत्मसात् करने की आवश्यकता है हम सब सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करने इसमें विस्तार करने और समरस समाज को बनाये रखने हेतु कृत संकल्पित हों ।

संदर्भः

1. https://deepu731.blogspot.com/2017/03/blog-post_25.html 25 march 2017.

2. https://hi.wikipedia.org/wiki/lqUnjyky "kekZ 17 April 2018

3. https://jivani.org/.../xq:&?kklhnkl&thouh--biography-of-guru-ghasidas-in-h...10 Jan. 2019

4. आशुतोष कुमार मंण्डावी, आदिवासी अस्मिता के प्रतीक शहीद वीर नारायण सिंह, छत्तीसगढ़ के गौरव रत्न संपादित डॉ. रामकुमार बेहार एवं श्रीमती निर्मला बेहार, 2007, पृ क्र. 130.
5. केयूर भूषण , ममतामयी मॉ मिनी माता, छत्तीसगढ़ के गौरव रत्न संपादित डॉ. रामकुमार बेहार एवं श्रीमती निर्मला बेहार, 2007, पृ.क्र. 110
6. संजय त्रिपाठी. एवं श्रीमती चंदन त्रिपाठी छत्तीसगढ़ वृहद् संदर्भ, उपकार प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014,पृ.क्र. 479.